IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिक्षमता में कोचिंग कक्षाओं के प्रभावों का अध्ययन"

प्रस्तुतकर्त्री
भव्या शर्मा
एम. एड. 3 सेमेस्टर

1. **शोध सार** :– भारतीय षिक्षा व्यवस्था में आदिकाल से गुरु षिष्य परम्परा रही है जिसमें षिष्य गुरु के आश्रम में षिक्षा ग्रहण करता था परंतु देष विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क एवं संस्कृतियों के सम्पर्क एवं संस्कृतियों के आदान–प्रदान से इस व्यवस्था में षिष्य षिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त षिक्षा के बदले जीविकोपार्जन हेतु गुरु को धन भेंट करता था जो कि षिष्य की आर्थिक स्थिति से संम्बंधित थी इसे गुरु दक्षिणा के तौर पर माना जाता था।
परंतु शनैः शनैः इस व्यवस्था में परिवर्तन होता गया। पूरी षिक्षण व्यवस्था गुरु के हाथ से निकलकर राजाओं के हाथ से गुजरती हुई वर्तमान में इस रूप में आ चुकी है। जिसमें सत्ता पक्ष अपनी विचारधारा के अनुसार षिक्षण व्यवस्था को चलाना चाहता है। यानि कि गुरु की भूमिका लगभग नगण्य हो गयी है। उसका परिणाम यह हुआ कि षिक्षक पूरी तरह धन प्राप्ति में व्यस्त हो गया। अब वह विद्यालय के बाद कमजार विद्यार्थियों को घर–घर जाकर ट्यूषन पढ़ाने लगा। जिसका महत्वपूर्ण कारण षिक्षकों की धन प्राप्ति की लालसा, बेरोजगार षिक्षकों के लिए रोजगार के अवसर एवं अभिभावकों के अपने बच्चे से अधिक आकांक्षा और इस प्रतियोगी युग में कमजोर होषियार बच्चा पीछे नहीं रहना चाहता है इस कारण यह उद्योग बहुत तेजी से फैल रहा है। इस अध्ययन में इन कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन करने के कारण विद्यार्थियों की अभिक्षमता का अध्ययन करना
2. **शोध का शीर्षक** :– "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिक्षमता में कोचिंग कक्षाओं के प्रभावों का अध्ययन"
3. **पृष्ठभूमि** :– आज का अभिभावक विद्यालय की पढ़ाई मात्र से संतुष्ट नहीं है अतः वह विद्यालय के अतिरिक्त अन्य विकल्पों का चुनाव करता है। अभिभावक यह भी मानते हैं कि विद्यालय पुराने ढर्रे पर संचालित हो रहे हैं। आधुनिक षिक्षा पद्धति हेतु ये कोचिंग कक्षायें ही बेहतर विकल्प हैं। शोधकर्ता अपने परिवार, आस–पड़ौस, गांव–षहर में विद्यार्थियों के विद्यालय समय के पष्चात् इन कोचिंग संस्थानों में विद्यार्थियों को अध्ययन करते हुए देखता है तो यह प्रष्न स्वाभाविक तौर पर आता है कि इस विद्यार्थियों में अभिक्षमता एवं निष्पत्ति पर कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्या? या फिर विद्यार्थी बिना कुछ प्राप्त किये इन संस्थानों में शोषण का षिकार हो रहा है तो इस अध्ययन का औचित्य शोधकर्ता के दिमाग में एक यक्ष प्रष्न की भांति सामने आ जाता है।

आज के समय में षिक्षा का बाजार बहुत बड़ा है। बड़े–बड़े विद्यालयों एवं कॉलेजों में बच्चों को अच्छी षिक्षा देने के नाम पर उनके माँ बाप से फीस के नाम पर अच्छी खासी रकम वसूली जाती है। परंतु इसके बावजूद देष के अधिकतर स्कूलों के बच्चे स्कूल में पढ़ने के साथ–साथ अलग से कोचिंग भी लेते हैं। ताकि जो चीजें उन्हें स्कूल के षिक्षक नहीं समझाते या वे वहाँ नहीं समझ पाते हैं वो चीजें वे कोचिंग जाकर सीख सकें।

- हमारी षिक्षा प्रणाली की गिरती गुणवत्ता के कारण कोचिंगों में जाकर सीख सकें।
- कोचिंग संस्थानों की भारी भरकम फीस के बोझ से आम आदमी त्रस्त है।

4. **शोध के उद्देष्य**:–
   1) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अभिक्षमता पर कोचिंग कक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
   2) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थियों की अभिक्षमता पर कोचिंग कक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
   3) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की निष्पत्ति पर कोचिंग कक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
   4) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थियों की निष्पत्ति पर कोचिंग कक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन करना
5. **परिकल्पना**:–
   1) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
   2) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थियों की अभिक्षमता पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
   3) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
   4) कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थियों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
6. **शोध प्रविधियाँ**:–
   1) **शोध विधि**:–प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार विधि का चयन किया गया है।
   2) **जनसंख्या**:–प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले की 5 कोचिंग संस्थाओं को जनसंख्या के रुप में चयन किया गया है।
   3) **न्यादर्ष**:–प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्ष के रूप में जयपुर क्षैत्र की कोचिंग में अध्ययनरत 150 विद्यार्थियों का चयन सौद्देष्य एवं यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।
   4) **उपकरण**:–प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री के द्वारा '' स्वनिर्मित'' प्रष्नावली का प्रयोग आँकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया।

5) **प्रदत्त संचयनः–**

- प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त अभिवृत्ति मापनी से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए शोधकर्त्री ने जयपुर जिले की कोचिंग संस्थाओं तथा अभिभावकों से प्रष्नावली भरवाई।
- इन मापनी को वितरित करने से पूर्व सभी विद्यार्थियों को निर्देष दिये गये।
- सभी विद्यार्थियों को प्रत्येक कथन पर अपनी राय व्यक्त करने के लिए निर्देष दिए गए।
- उसके बाद प्रष्नावली का प्रषासन पूर्व नियोजित सूचना व कार्यक्रम अनुसार किया गया।
- प्राप्त आँकड़ों का उद्देष्य आधारित विवेचन किया गया। इस हेतु प्रत्येक कथनों से प्राप्त उत्तरों की जाँच की गई। प्रत्येक पद का विवेचन किया गया।
- विवेचन के आधार पर निष्कर्ष एवं परिणाम प्राप्त हुए।

6) **प्रदत्तों का विष्लेषण एवं व्याख्याः–**

परिकल्पना – 1

कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	कोचिंग कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी	75	89.75
2	कोचिंग कक्षाओं में नहीं अध्ययनरत विद्यार्थी	75	78.20

तालिका संख्याः–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कोचिंग कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थीयों का प्रतिषत 89.75 तथा कोचिंग कक्षा में नहीं अध्ययनरत विद्यार्थीयों का प्रतिषत 78.20 पाया गया है अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जा सकती है।

परिकल्पना – 2

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	कोचिंग कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी	75	90.2
2	कोचिंग कक्षाओं में नहीं अध्ययनरत विद्यार्थी	75	89.13

विष्लेषण एवं व्याख्याः– उपरोक्त तालिका संख्याः–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कोचिंग में अध्ययनरत विद्यार्थीयों का प्रतिषत 90.2 तथा कोचिंग कक्षा में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थीयों का प्रतिषत 89.13 पाया गया है अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत परिकल्पना है।

परिकल्पना – 3

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	कोचिंग कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी	75	82.45
2	कोचिंग कक्षाओं में नहीं अध्ययनरत विद्यार्थी	75	86.40

विष्लेषण एवं व्याख्याः– उपरोक्त तालिका संख्याः–3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कोचिंग में अध्ययनरत विद्यार्थीयों का प्रतिषत 82.45 तथा कोचिंग कक्षा में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थीयों का प्रतिषत 86.40 पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत परिकल्पना है।

परिकल्पना – 4

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	कोचिंग कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी	75	92
2	कोचिंग कक्षाओं में नहीं अध्ययनरत विद्यार्थी	75	88

विष्लेषण एवं व्याख्याः– उपरोक्त तालिका संख्याः–4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कोचिंग में अध्ययनरत विद्यार्थीयों का प्रतिषत 92 तथा कोचिंग कक्षा में अध्ययन नहीं करने वाले विद्यार्थीयों का प्रतिषत 88 पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत परिकल्पना है।

परिणामः– प्रस्तुत शोध में प्रतिषत सांख्यिकी द्वारा प्राप्त परिणामों की विवेचना एवं विष्लेषण किया गया। सांख्यिकी विष्लेषण के पष्चात् यह ज्ञात होता है कि जयपुर जिले में कोचिंग संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिक्षमता में विकास हुआ तथा विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हुई है।

शैक्षिक निहितार्थः–

- वर्तमान में प्रतियोगिता के युग में विद्यार्थी अपनी अभिक्षमता का विकास कर सके इसलिए षिक्षकों को विद्यार्थियों के मनोविज्ञान को समझने का प्रयास करना चाहिए।
- कोचिंग कक्षा में अध्ययन कराने हेतु विषेष षिक्षण–कौषलों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- कोचिंग कक्षाओं को अपनी उपलब्धि को सच्चाई के साथ प्रसारित करना चाहिए।
- कोचिंग कक्षाओं में नवीन षिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
- कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन हेतु प्रषिक्षित विषय विषेषज्ञों की सेवाएं लेनी चाहिए।
- प्रषासकों को षिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को ''कोचिंग'' कक्षाओं में जाने की बाध्यता पर रोक लगानी चाहिए।

- कोचिंग संस्थानों तथा उनमें कार्यरत षिक्षकों की नियमित जांच प्रषासकों द्वारा की जानी चाहिए।
- कोचिंग कक्षाओं में प्रवेष दिलवाने से पूर्व विषय अध्यापक से परामर्ष अवष्य लेना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथः–

- महेष चन्द्र भार्गव – ''मनोवैज्ञानिक परिक्षण एवं मापन'' साहित्य भवन पब्लिषर्स, आगरा
- राय पारसनाथ : अनुसंधान परिचय, आगरा
- शर्मा आर. ए. : षिक्षा अनुसंधान, लॉयल बुक डिपो मेरठ
- एस. पी. सुखिया एवं अन्यः– शैक्षिक अनुसंधान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–1970
- J.W. Best “Research in education” Prince hall all India fifth edition – 1986
- R.A. Sharma: “Fundamentals of education research” International publishing house Meerut - 1993